**SHODH SAGAR®**
**Innovative Research Thoughts**
ISSN: 2454-308X | Vol. 10 | Issue 3 | Jul - Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

# मार्कण्डेय के कथा साहित्य में अमानवीयता और उत्पीड़न के विरोध का यथार्थवादी चित्रण

**मोनिका उपाध्याय**
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग)
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
**शोध केन्द्र : शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरैना**

**डॉ. साधना दीक्षित**
प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मुरैना (म.प्र.)

**DOI:** https://doi.org/10.36676/irt.v10.i3.1493
Published: 19-09-24

**शोध– सारांश**

कथाकार मार्कण्डेय ने अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्यों को आपस में प्रेम से रहने की प्रेरणा दी है। उनकी दृष्टि प्रगतिशील तथा मानवतावादी है इसलिए किसी भी स्तर पर अमानवीयता एवं उत्पीड़न के वे विरोधी है। वर्तमान समाज में ऊँच–नीच, छूत–अछूत आदि की जो घृणा मूलक प्रवृत्तियाँ है, उनके प्रति इन्होंने अपनी कहानियों में प्रबल विरोध जताया है। मार्कण्डेय का सामाजिक जीवन से प्रत्यक्ष तादात्म्य है। अतरू इन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक समस्याओं को सहज रूप में उजागर किया है जिसमें शोषित वर्ग के विविध पक्षों के समस्याओं, संघर्षों एवं विषमताओं का चित्रण हुआ है।

मुख्य बिन्दु – दृष्टि, उत्पीड़न, अमानवीयता, तादात्म्य, शोषित, विविध, चित्रण

शोध– प्रपत्र :

मार्कण्डेय को 'हंसा जाई अकेला' कहानी में हंसा अमानवीय व्यवहार, छुआ–छूत और उच्च वर्ग के लोगों के उत्पीड़न का विरोध गांधी के मानवतावादी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तथा चुनाव जीतने के सफल प्रयास करते हुए, जड़ से समाप्त करने का आह्वान करता है जो निम्नलिखित अंश में प्रस्तुत है– **"बाबू साहब जो कहें मान लो। पूड़ी–मिठाई राजा के तम्मू में खाओं। खरचा–खोराक बाबू साहब से लो और मोटर में बैठो। लेकिन कांग्रेस का बक्सा याद रखो। वहां जा कर खाना–पीना भूल जाओ? कांग्रेस तुम्हारे राज के लिए लड़ती है। बेदखली बंद होगी। छूआ–छूत बंद होगा। जनता का राज होगा। एक बार बोला, बोलो गन्ही महात्मा की जय! जय!"**[1]

मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से आधुनिक युग की सड़ी–गली प्रवृत्तियों का खण्डन कर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया है। शोषक और शोषित के वर्ग संघर्ष का चित्रण कर लोकमंगल के दृष्टिकोण से समन्वित सामाजिक यथार्थवाद का बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। 'महुए के पेड़' कहानी में जब गाँव के ठाकुर को यह पता चलता है कि दुःखना बाहर गयी है तो आनन फानन में वह महुए के पेड़ और उसके पूरे सम्पत्ति को कब्जा कर लेना चाहता है, क्योंकि वह पहले से ही बकुल ध्यान लगाए हुए है।



© 2024 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

**''ठाकुर के जी में जी आया। उन्होंने सम्पत्ति पर जल्दी ही कब्जा कर लेना उचित समझा, क्योंकि देर होना, इसमें ठीक नहीं और लुहारों के टांगे महुए की जड़ पर चलने लगे। पूरे दिन लग गये, पर तना कट न सका। आखिर रोशनी जलाकर रातभर काम होता रहा और भोर में पेड़ भीषण करकराहट की आवाज के साथ दुखना की झोपड़ी पर जा गिरा। दीवारे और फूस की छत भी साथ ध्वस्त हो गयी। दुखना की मिट्टी की गगरी और छोटी सी चारपाई भी टूट कर चूर हो गयी। उसी दिन दोपहर को अपनी लकड़ी के सहारे, लुढ़कती आती दुखना को देखकर.....कोई सामने न पड़ा। ठाकुर घर में घुसे तो बाहर नहीं आए...जमींदार को कोसती–कोसती पहुंची।''[2]**

इस प्रकार मार्कण्डेय का व्यक्तित्व एवं विचार प्रगतिशील तत्वों पर आधारित है, जिसका सुन्दर एवं प्रभावशाली चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है। 'दोने की पत्तियाँ' कहानी में भोला तिवारी इंजीनियर द्वारा उत्पीड़ित होकर यह मान बैठता है कि उसका खेत अब किसी तरह नहीं बच सकता है, तो वह घर न लौटने का निश्चय कर लेता है। उसे अपने बच्चों एवं पत्नी की चिन्ता थी क्योंकि खेत छिन जाने पर उसके जीवन–यापन करने का अन्य कोई साधन नहीं था, पांच वर्ष में उसने आधे पेट भोजन कर खेत का मालिकाना हक प्राप्त किया था। अतः इस अमानवीयता और उत्पीड़न के विरोध में तिवारी इंजीनियर की हत्या करने का दृढ़ निश्चय कर लेता है।

**''डगमगाता हुआ, कोठी के दरवाजे पर पहुंच गया। दरवान सो रहे थे। तिवारी सामने ही सोया था। भोला के हाथ ऐठे, पर इसने तो अपना खेत बचाया है। सब अपना बचाने की कोशिश करता है। सबके अपने स्वार्थ.. सारा दोष इंजीनियर का है। धूर्त है, वह। वही सारे अनरथ का जड़ है।''[3]** यहां कहानीकार ने भोला जैसे निरीह कृषक का पक्ष लेते पटवारी एवं इंजीनियर तिवारी की शोषण एवं उत्पीड़नधर्मी कार्यवाही का अनावरण किया है।

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में दलित एवं शोषित समाज के विभिन्न रूपों का सजीव चित्रण हुआ है, इनका कथा साहित्य शोषित एवं दलित समाज का घोषित पक्षधर है। इसलिए मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से शोषित एवं दलित समाज के उत्थान हेतु विभिन्न आंदोलनों एवं विभिन्न कार्यक्रमों की कहानियों में इन्हें यथोचित स्थान दिया है– क्योंकि समाज की आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप ही समाज की समस्त भावनाओं, परम्पराओं और नैतिकता तथा उसके विभिन्न आयामों का नियमन होता है। जब तक समाज की आर्थिक व्यवस्था, वर्गवैषम्य एवं शोषण पर आधारित रहेगी तब तक समाज में किसी स्वस्थ परम्परा के विकास का होना असम्भव है।

शोषित एवं दलित मजदूर विपन्नता में संघर्ष करते हुए जीवन–यापन करने के लिए तथा अपने–अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए जो संघर्ष करते हैं, वह शोषक वर्ग की कार्यशैली के समक्ष महत्वहीन हो जाता है क्योंकि शोषक वर्ग अधिक मजबूत और शक्तिशाली है। 'चाद का टुकड़ा' कहानी इसका जीता–जागता उदाहरण है– **''चौथे दिन जोर का पानी बरस गया। जमीन पानी में डूब गयी। कई दिनों के लिए काम बन्द हो गया। मजदूरों ने अपना झउआ–फरसा सम्हाला और चले गये। जो बचे थे, उन्होंने ठेकेदार से कहा, साहेब, सनोहर भूखों मर रहा है, उसकी चार दिनों की मजूरी....हफ्ता पूरा भी नहीं हुआ।''[4]** ठेकेदार बिगड़कर बोला। साहेब हम कमकर हैं, बिना खाये दिन भर फरसा चलायेंगे तो कैसे जान बचेगी। बेकार की बात है।



© 2024 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com

वह बीमार होगा। **''भूख से कोई कैसे मर सकता है? इस प्रकार गाँव में सम्पन्न वर्ग द्वारा मजदूरों के श्रम का अत्यन्त शोषण होता है। काम करवा लेने के बाद उचित मजदूरी नहीं मिलती है।''**[5]

मार्कण्डेय ने अपनी कहानियों में जमींदारों और पूंजीपतियों के प्रति तीखा प्रहार करते हुए दलितों, किसानों और मजदूरों में अपने सामाजिक और राजनीतिक अस्तित्वों के प्रति चेतना जगाने का प्रयत्न किया है। जिन किसानों को अपनी कहानियों में मार्कण्डेय ने स्थान दिया है, उन्हें शोषक वर्ग द्वारा बहुत शोषित किया गया है। 'दोने की पत्तियाँ' में 'भोला' नामक किसान का तिवारी इन्जीनियर द्वारा इतना शोषण किया जाता है कि भोला विक्षिप्त होकर शासन और तिवारी इंजीनियर के विरोध में विद्रोह कर बैठता है और अन्त में उन्हें जान से मार डालने का निश्चय कर लेता है ।

**''वर्णव्यवस्था में आज भी उत्पीड़न और शोषण के चक्रव्यूह में मजदूर वर्ग फंसा हुआ है।''**[6] मार्कण्डेय द्वारा अपने कथा साहित्य में शोषक, सड़ी–गली, विसंगतिग्रस्त शक्तियों को उजागर करना है, जिसमें जीवन प्रतिबिम्ब का यथातथ्य चित्रण करते हुए मानव जीवन की अभिव्यक्ति की गयी है, क्योंकि प्रेमचन्द जी ने भी यह माना है साहित्य ही सच्चा इतिहास है क्योंकि उसमें अपने देश और काल का जैसा चित्र होता है, वैसा कोरे इतिहास में नहीं हो सकता। घटनाओं की तालिका इतिहास नहीं है, और न राजाओं की लड़ाईयाँ ही इतिहास है। इतिहास जीवन के विभिन्न अंगों की प्रगति का नाम है और जीवन पर साहित्य से अधिक प्रकाश और कौन वस्तु डाल सकती है, क्योंकि साहित्य अपने देश काल का प्रतिबिम्ब होता है। इस प्रकार साहित्य का उद्देश्य जीवन के आदर्श को उपस्थित करना है। साहित्य की सोद्येश्यता की कसौटी पर मार्कण्डेय का कथा साहित्य पूर्ण रूपेण खरा उतरा है। मार्कण्डेय की कहानी कला के मूल में लोक मंगल की भावना और समष्टि सत्य की धारणा है और सामाजिक उद्देश्य की प्रेरणा है।

## संदर्भ सूची

1– मार्कण्डेय– 'हंसा जाई अकेला', पृ.61
2– मार्कण्डेय– 'महुए का पेड़', पृ.133
3– मार्कण्डेय– 'दोने की पत्तियॉ', पृ.40
4– मार्कण्डेय– 'चॉद का टुकड़ा', पृ.75
5– मार्कण्डेय– 'हंसा जाई अकेला', पृ.60
6– मार्कण्डेय– 'चॉद का टुकड़ा', पृ.75



© 2024 Published by Shodh Sagar. This is a Gold Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://irt.shodhsagar.com